IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

व्यवहारिक और पारमार्थिक स्वरूप : धर्म दृष्टिकोण

Dr. Rajiv Ranjan Pandey, Assistant Professor, PHILOSOPHY,
R.B.G.R. College, Maharajganj, Siwan, J. P. University, Chhapra

व्यवहारिक धर्म– वह धर्म, जो किसी हद तक किसी खास देश, काल एवं परिस्थिति विशेष ही सत्य एवं सीमित होते है। विभिन्न देश–काल दृष्टिकोण से विभिन्न एवं युगानुसार परिवर्तित होते रहते है।

जैसे– गाय–गंगा, बुर्का, सुअर, वपतिस्मा, रहन–सहन, खान–पान नियम आदि। पारमार्थिक धर्म – वह धर्म, जो सभी देश, काल और परिस्थिति में एक समान रहते है, जिसके कारण सबके लिए ये अनिवार्य है यहीं मूल/सत्य धर्म है।

यहुदी व्यवहारिक धर्म

* समस्त वस्तुएँ, तुम्हारे आहार के लिए है। (उत्पत्ति, 1:24–31) * विश्राम दिवस (उत्पत्ति, 2:1–4) * भाई की हत्या न करना (उत्पत्ति, 4:4–16) * यहुदियों में माता–पुत्र सहवास के अलावा, अन्य सभी प्रकार के स्थिति में सहवास के चिन्ह है, जिसे बाद में मूसा एवं मोहम्मद ने सुधार किये। (उत्पत्ति, 11:27–29, 15:3, 16:1–5, 19:32–38, 20:11–13, 25:6, 35:22, 37:8 निर्गमन 6:20) * खतना प्रथा (उत्पत्ति 15:9–14) * विकट स्थिति में झुठ बोलना (उत्पत्ति, 20:11) * जनसंख्या बढ़ाना शुभ (उत्पत्ति, 29:30–35, 30:1–24) * मूर्तिपूजा पाप (उत्पत्ति 35:2) * भाईचारा धर्म (उत्पत्ति, 45:15) * पशुबलि एवं पहिलौठा पुत्र चाहे, मनुष्य का हो या पशु का, परमेश्वर के लिए (उत्पत्ति, 13:1–2, 34:14) * यहोवा के अलावा किसी अन्य देवता की पूजा नहीं। (निर्गमन, 20:5) * पड़ोसी के विरूद्ध झुठी गवाही न देना। (निर्गमन 20:16) * माता–पिता का आदर करना (निर्गमन, 20:12) * जैसे

को तैसा सिद्धांत (निर्गमन, 21:24–26) * दुष्टों के पुरूष, स्त्री, बच्चा, पशु जो भी दिखे, मार डालना (शमुएल I, 15:3) * व्यभिचार न करना (निर्गमन, 20:14) * उपवास (यशाशाह, 58:4–8 निर्गमन 24:18, 34:28) * परदेशियों से न्यायोचित व्यवहार (निर्गमन 22:21)

यहुदी पारमार्थिक धर्म

1. परमसत्ता में विश्वास, निरंतर प्रार्थना, श्रद्धापूर्ण ईश्वर आज्ञाकारिता (निर्गमन 20:2)
2. एक परमेश्वर के लिए, अन्य समस्त धर्मो का त्याग (अनासक्ति), उदाहरण– मातृधर्म, देशधर्म, प्रतिज्ञा धर्म आदि { निर्गमन 20:1–17, उत्पत्ति 17:1, 17:5, 17:15}
3. उपवास (उच्चतर संयम), निर्गमन, 24:18, 34:28
4. अपने सम्पूर्ण चेष्टाओं को विभिन्न विधियों से परमेश्वर में लगाना (यज्ञ), { निर्गमन 13:1–2, गिनती, 18:15–17, व्यस्थापिका, 10:18, निर्गमन 22:22, 34:14, अय्यूब, 1:21–22}

ईसाई व्यवहारिक धर्म

* प्रेम, क्षमा, दया * पड़ोसी एवं भ्रातृ प्रेम * माता–पिता का आदर * रोगी, पीड़ीत एवं जरूरतमंद की सेवा * वपतिस्मा * अत्याचारियों के लिए सहनशक्ति परमेश्वर प्रार्थना के साथ * आलसी, निकम्मे एंव अग्लानि को क्षमा नहीं * जैसी करनी, वैसी भरनी (देश–काल परिवर्तित दृष्टिकोण) * दुष्टों के मध्य, विश्वासी को सॉप की तरह चालाक एवं कबुतर की तरह भोला बनना * स्वभाविक क्षमता के अनुसार अत्याचार सहन, जरूरत पड़ने पर भागकर अपनी जान बचाना, परंतु लगातार लगे रहना (प्रयत्न) अर्थात ''आत्मरक्षण'' * पाखंड का विरोध * आत्म बलिदान * संयासवाद * मेल–मिलाप, आनंद परमेश्वर के प्रति (रोमियो 14:17) * पवित्र चुंबन से नमस्कार * पुरूष सिर न ढॅके, स्त्री सिर ढॅके, प्रार्थना हेतु * व्यभिचार, गंदे काम,

लुच्चापन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा अशुभ कर्म, * प्रेम, आनंद, भाई–चारा, मेल, धैर्य, कृपा, भलाई, नम्रता आदि शुभ कर्म (थिस्सलुनीकियों, 15:19–23) * बच्चा जनना संयम सहित, विश्वास, पुरूष का सहयोग, प्रेम व स्थिरता, स्त्री का धर्म परमेश्वर हेतु * पादरी निर्दोष, एक पत्नी व्रत, संयमी, श्रेष्ठ शिक्षक (तीमुथियस 3:1–2)* विधवा विवाह पुर्नजागरण (तिमुथियस, 5:4) * पुनरूत्थान एवं न्याय दिवस में विश्वास * पशु के प्रति दया * जाति, वर्ण आदि का विरोध * गदहे को शुभ मानना * परमेश्वर पर विश्वास, कि ईश्वर पतनकारियों को एक दिन अवश्य नष्ट कर देगा। (मत्तिः 13:41–43)

ईसाई पारमार्थिक धर्म

1. परमेश्वर में विश्वास एवं निरंतर प्रार्थना।
2. उच्चतर आत्मसंयम (इन्द्रिय संयम, परहेजगारी) मत्ती, 18:7 मरकुस 7:21–22
3. एक परमेश्वर के लिए अन्य समस्त धर्मो का त्याग उदाहरण– मातृ–पितृ धर्म, देश धर्म, भौतिक धर्म (गीता, 18/65–66 मत्ती, 5:33–38, रोमियों, 15:6)
4. अपने सम्पूर्ण चेष्टाओं, विधियों से परमेश्वर में लगाना (यज्ञ) {कुरिंथियों 2, 4:8–9, गीता 3/9}
5. गुप्त प्रेम, प्रार्थना, दान श्रेयस्कर है, ये जानते हुए कि सब परमेश्वर की इच्छा से हो रहा है। (मत्ती, 6:36–4)

ईस्लाम व्यवहारिक धर्म

* बुर्का प्रथा, खतना प्रथा, टोपी, अरबी पहनावा, महिला नियम * संभोग एवं तलाक नियम * 4 बीबी पुरूष के लिए * पशुबलि, सुअर अवध * मातृ–पितृ धर्म, तांत्रिक, भूत–प्रेत, फतवा * काबा परिक्रमा, जकात * बदला का बदला नियम * रोजा, हज, वसीयत नियम, अभिवादन नियम, जेहाद, अल्लाह का स्वरूप नियम * बहुदेववाद, मूर्तिपूजा धृणा, विरोध, गुलाम नियम * खौफ फैलाना * काफिरों से विरोध (यहुदी व ईसाई को दोस्त न मानना) * जेहाद * कियामत

ईस्लाम में पारमार्थिक स्वरूप

* अल्लाह/ईश्वर में विश्वास एवं निरंतर प्रार्थना
* एक परमेश्वर के लिए अन्य समस्त धर्मो का त्याग (अनासक्ति) गृहस्थ में रहते हुए {जैसे– मातृ–पितृ धर्म, देश धर्म, प्रतिज्ञा धर्म आदि सीमित धर्म}
* उपवास, परहेजगारी (उच्चतर संयम) { कुरान 2:51, 2:68 }
* अपनी सम्पूर्ण चेष्टाओं को विभिन्न विधियों से परमेश्वर में लगाना (यज्ञ) { कुरान 8:2–3, 2:183, 189, 157, 177, 195 }

सुफी पारमार्थिक धर्म

* एक परमेश्वर के प्रति शुद्ध आशिकी, कर्मकांड/शरीयत की उपेक्षा करते हुए (सीमित धर्म)
* कठोर तपस्या, वासना विजयी, उच्चतर संयमी
* उपवास अर्थात कड़ा अनुशासन
* 'अनलहक' (मैं ही बह्म हूँ– सायुज्य स्थिति), जीवात्मा और परमात्मा अभिन्न है।

भगवद्गीता का पारमार्थिक धर्म

* राजयोग– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि
* ज्ञानयोग – नित्यानित्यवस्तुविवेक, इहामुत्रार्थभोगविराग, शमदमादिसाधनसम्पत, मुमुक्षुत्व
* भक्तियोग – आनुकूल्यसंकल्प, प्रतिकूल्यवर्जन, महाविश्वास, महाकार्पण्य, गोप्तृत्ववरण, आत्मनिक्षेपण, ध्रुवा स्मृति
* कर्मयोग– 1. कर्म का त्याग नहीं, कर्म में त्याग, 2. फलरहित कर्म (निष्काम), 3. वर्ण व्यवस्था कर्माधारित, 4. स्वधर्म, 5. भक्तिसंयुक्त समर्पण